Issue No : 7 November 2016
ISSN No. : 2350-1391

NIVRJ

NEW INTERNATIONAL VALUABLE RESEARCH JOURNAL

Chief Editor

Asst. Prof. A. V. Hi

Prathmesh Prakashan, Aurangabad

Scanned with CamScanner

ORIGINAL ARTICLE

सृजनात्मकता कौशल्य विकास में शिक्षक की भूमिका

प्रा.डॉ कविता साळुंके सहयोगी प्राध्यापक

ईमेल. Kavita_salunke @hotmail.com

कु.ज्योती लाकरी पीएच.डी संशोधक विद्यार्थी

शिक्षणशास्त्र विद्याशाखा

य.च.म.मु विद्यापीठ नाशिक

ईमेल.Ph.djyoti@gmail.com

प्रस्तावना

राष्ट्र की उन्नती हेतु भारतीय शिक्षण व्यवस्था में हर बार बदलाव देखे गए है। इस बदलाव के बाद शिक्षण पध्दती में बदलाव आवश्यक माने गए। बदलाव करने के हेतु एक ही है । बालक का विकास बालक के विकास के साथ समाज का विकास और उसके बाद राष्ट्र का विकास आपने आप हो सकता है इस लिए शिक्षण क्षेत्र में प्रथम मुल्योंका समावेश किया गए। उसे बाद राष्ट्र के हित के लिए गाभा घटकों का शामिल किया गए मतलब समाज की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शिक्षणक्षेत्र में बदलाव देखे गए है। इसी बदलाव को ध्यान रखते हुवे WHO ने १९९७ में जीवन कौशल्य शिक्षा का समावेश किया है। इस जीवन कौशल्य शिक्षा के माध्यमसे बालक को जीवन जीने की कला सिखाई जा सकती है। इस जीवन कौशल्य शिक्षा में कुल दस जीवन कौशल्य को चुना गया है। जीवन कौशल्य शिक्षा के माध्यम से बालक स्व:की पहचान कर सकता है। समस्या का समाधान कर सकता है। सही निर्णय ले सकता है। सहानुभूति दिखा सकता है। आलोचनात्मक चिन्तन कर सकता है।पारस्परिक सम्बन्ध को बढा सकता है। प्रभावी सम्प्रेषण कर सकता है। तनाव के साथ सामना कर भावनाओं पर नियत्रंण रख सकता है। अपने सृजनात्मक विचार से नई सोच जन्म दे सकता है। इन कौशल्य को कक्षा १ से लेकर १२ तक पाठयक्रम से शामिल किया गए है। इन कौशल्य विचार करते हुवे इस लेख में सिर्फ सृजनात्मक कौशल्य चुन कर इस कौशल्य का विकास करने में शिक्षक कैसी भूमिका निभा सकता है। इस पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गए है।

जीवन कौशल का अर्थ

विश्व स्वास्थ्य संगठन १९९३ ने जीवन कौशल्य को परिभाषित किया है कि " जीवन कौशल के अर्थ में वे मनोवैज्ञानिक क्षमताएँ जिससे अनुकुलित और सकारात्मक व्यवहार आते हैं जिससे कोई व्यक्ति अपनी प्रतिदिन जीवन में आने वाली चुनौतियों और आवश्यकताओं से प्रभावी ढंग से समायोजित करने में सक्षम है।"

ज्ञान

ज्ञान शब्द को अधिकतर सूचना के अर्थ में विभिन्न सन्दर्भो मे ले लिया जाता है लेकिन जीवन कौशल शिक्षा के विचार - विमर्श में सुचना से तात्पर्य किसी विशेष तथ्य या विषय के बारें मे बताता

Scanned with CamScanner

है। जबकि ज्ञान बोध की वह स्थिती है जो तथ्यात्मक जानकारी से सम्बन्धित अन्य जानकारी और ज्ञान को व्यापक प्रत्ययों में संश्लेषित करने और प्रायोगिक उपयोगिता को बताया है।

दृष्टीकोन

दृष्टीकोन को अर्थ जीवन कौशल शिक्षा में स्वयं और दुसरों के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है।जिसमे सामाजिक मानदण्ड,नैतिकता,मुल्य,अधिकार संस्कृति,परम्परा,आध्यात्मिकता,धर्म,और भावनाएँ आदि आते है।

इसलिए हम कह सकते हैं कि जीवन कौशल,मनो-सामाजिक और अन्तरव्यक्ति कौशलों का एक बडा समूह है जो कि व्यक्ति को निर्णय लेने में,प्रभाव संवादी करने में,सुरक्षा करने में और स्वयं प्रबन्धन कौशल विकसित करने में सहायता करते है। जिससे एक व्यक्ति को स्वस्थ एवं विकसित जीवन जीने में सहायात मिलती है। आजकल जीवन कौशल शिक्षा शब्द का प्रयोग व्यापक रूप से किया जा रहा है लेकिन इसको अधिकतर आजीविका कौशल की जगह प्रयोग किया जाने लगता है। जबकि ये दोनों अलग अर्थ रखते है।

जीवन कौशल के प्रकार

१) मुलतः कौशल दो प्रकार के होते है २) जो चिन्तन के साथ सम्बन्धित होते है चिन्तन कौशल कहा जाता है। और वह कौशल जो दूसरां के साथ व्यवहार करने से सम्बन्धित हैं उन्हें सामाजिक कौशल कहा जाता है। इन प्रकारोमे से जो चिन्तन के साथ सम्बन्धित है जीवन कौशल वह सृजनात्मक जीवन कौशल का विचार इस लेख में किया गए है।

सृजनात्मक कौशल शिक्षा

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है इसलिए मनौवैज्ञानिकों का ध्यान उस अदभुत योग्यता एवं शक्ति के सम्बध में शोध करने के लिए आकर्षित हुआ जो व्यक्ति को नित्य नये आविष्कार करने,जटिल समस्याओं ढूँढने तथा जीवन को सुख मय बनाने के लिए मानव को सहयोग प्रदान करती है। इस अदभूत एवं मनोहरी योग्यता को ही सृजनात्मकता की संज्ञा दी जाती है।

सृजनात्मकता प्रायः समस्त प्राणियों में पायी जाती हैं परन्तु किसी में कम पायी जाती है,किसी में अधिक ।प्रायः यह माना जाता है की केवल लेखक,कवी चित्रकार,संगितकार,वैज्ञानिक,फिल्म अभिनेता आदि ही सृजनशील व्यक्ति होते है.आज यह विचार मान्य नही है क्योंकि आधुनिक मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि सृजनात्मकता किसी भी क्षेत्र में अपना सुखद प्रभाव दिखा सकती है। अध्यापक,क्लर्क,श्रमिक,माता,रसोइया,कृषक,औद्योगिक कर्मचारी आदि अपने - अपने क्षेत्र में सृजनात्मक हो सकते है। यदि एक माता भली - भाँती बच्चे का पालन - पोषण करके या एक अध्यापक बच्चे की अच्छी एवं उपयोग शिक्षा देकर या एक रसोइया नयी सन्तुलित एवं पोषण युक्त मानों से खाद्य सामग्री तैयार करे या एक कल्र्क ऑफिस विकास के लिए नवीन विधियों से कार्य करके समाज एवं देश के लिए लाभकारी कार्य करे तो हम कह सकते है कि इन सभी प्राणियों मे पर्याप्त मात्रा में सृजनात्मकता विद्यमान है।

59

Scanned with CamScanner

सृजनात्मकता का अर्थ

डीहान तथा हेविंगहर्स्ट १९६१

के विचार में,"सृजनात्मकता वह गुण हैं जो नवीन तथा वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर आकृष्ट करें यह नवीन उत्पादन सम्पर्ण समाज अथवा। केवल उत्पादक व्यक्ति के लिए नवीन हो सकता है।"

थर्स्टन १९५५

"कोई भी वह क्रिया सृजनात्मक है जिसका तत्काल समाधान प्राप्त हो जाये क्योंकि इस प्रकार का हल विचारक के लिए सदैव नवीनता लिए हुए है।"

गिलफार्ड "सृजनात्मकता के अन्तर्गत पाँच मानसिक व्यापार"

१) ग्रहणात्मक व्यापार
२) केन्द्राभिमुख
३) केन्दाभिमुख चिन्तन
४) स्मृती
५) मूल्यांकन रहते हैं

ई.पी टोरेन्स

"सृजनात्मक चिन्तन रिक्ताओं,त्रुटियों तथा अप्राप्त तत्त्वों को समझने,उनके सम्बध में धारणाएँ बनाने तथा अनुमान लगाने,धारणाओं का परीक्षण करने,परिणाम को अन्य तक पहुँचाने तथा धारणाओं का पुनर्परीक्षण करके उनमे सुधार करने की प्रक्रिया है।"

स्किनर

"सृजनात्मक चिन्तन का अर्थ है कि व्यक्ति की भविष्यवाणियाँ गिएडर्प नवीन,मौलिक,अन्वेषणात्मक तथा असाधारण है।सृजनात्मक चिन्तन वह है जो नये क्षेत्र की खोज करता है,नये परीक्षण करता है नई भविष्यवाणियाँ करता है तथा नये गिएडप निकलता है"

सृजनात्मक चिन्तन की प्रक्रिया

वाल्स के अनुसार सृजनात्मकता की प्रक्रिया के अन्तर्गत चार स्तर बताये हैं,जो निम्न हैं

१) तथ्य संग्रह एवं तैयारी

तथ्यों की छानबीन करके उन आवश्यक तथ्यों को ग्रहण करना जिनका उपयोग समस्या समाधान के लिए आवयश्यक है.

२) परिपक्वता की अवस्था

समस्या से सम्बन्धित आवश्यक तथ्यों को चुनकर एकत्रित तथ्यों के आधार पर चिन्तन कर समस्या समाधान के लिए प्रयास किया जाता है।यहाँ विचारों का परीक्षण,पुनर्परिक्षण,विचारों का व्यवस्थापन पुन:व्यवस्थापन करता है।अन्तदृष्टी के आधार पर प्रयत्न एवं भूल के आधार पर निर्णय लेना है इस अवस्था में क्रिया दिखाई नही देती है।समस्या का समाधान अचेतन रूप से होता है।

60

Scanned with CamScanner

३) सूझ या प्रकाशन की अवस्था

इस अवस्था में अचानक ही विचारक के मन में समस्या का हल सूझ जाता है। अचानक किसी कल्पना का उदय होना सूझ है। यह एकाएक आती है किसी प्रकार की कोशिश जरूरी नहीं है।जैसे सी -वी.रमण के अचानक विचार आया आया कि समुद्र का पानी नीला क्यों होता है या न्यूनटन का उदाहरण पेड से सेब नीचे क्यों गिरता है।

४) विचारों की अभिव्यक्ति

मन में आने वाले नवीन विचारों को शब्दो का रूप देना।एक कलाकार अपनी कल्पना कैनवस में उतारता है।साहित्यकार उसे अपनी रचना में शामिल करता है जरूरत पडती है तो वह अपने विचारों की काँट-छाँट भी करता है।इस प्रकार वह अपनी रचना या कृति को एक नया रूप देता है।

इस सत्यापन की अवस्था भी कहते हैं क्योंकि यहाँ समस्या के हल का सत्यापन किया जाता है.

सृजनात्मकता का मापन

सृजनात्मकता के मापन के सम्बन्ध में भी मनोवैज्ञानिकों ने उल्लेखनीय प्रयास किये है।अमेरिका में टेलर एवं हॉलैण्ड ने यह बताया है कि माना ज्ञान के एकता इस से व्यक्ति रचनात्मक चिन्तन वाला नाही हा सकता भारतवर्ष में मनोवैज्ञनिकों ने अनेक रचनात्क परिक्षणों का निर्माण किया।उनमें प्रमुख

१) पासी का सृजानात्मक परीक्षण (PTC)
२) मेंहदी का शाब्दिक सृजनात्मक परीक्षण(TCW)
३) मेहदी का अशाब्दिक सृजनात्मक परीक्षण(TCF)
४) मल्होत्रा आंग्ल भाषा सृजनात्मक परीक्षण(LCT)
५) मल्होत्रा हिन्दी भाषा सृजनात्मक परीक्षण (LCT)
६) शर्मा वैज्ञनिक रचनात्मक परीक्षण (UTS)

इन साधनों के माध्यम से शिक्षक अपने छात्रों की सृजनशील विचारो को बढावा दे सकता है.

सृजनात्मक चिन्तन के लिए शिक्षक की भूमिक।

इस विषयके बारे में शिक्षक स्वंय क्या कर सकता है। यह सोच कर हमने ५० शिक्षकों के साथ चर्चा की उनकी मुलाखत लेने के बाद हमे कुछ सुझाव मिले। उसमें से २० महत्वपूर्ण सुझाव इस पेपर में हमने सबके विचारार्थ रखे वह सुझाव है।

१) अध्यापक ने विषय पर तथा अध्यापन विधी पर अधिकार का विकास करना चाहिए।
२) इस सामान्य दर्शन का पालन करना चाहिए कि सत्य को खोजा जाना चाहिए न की उसे झूट समजा जाना चाहिए
३) योग्य निरीक्षण के अन्तर्गत अधिक व्यक्तिगत कार्यों की अनुमती देनी चाहिए।
४) पाटयक्रम को तथ्यों के आधार पर न बनाकर प्रत्यायों के आधार पर संगठित करना चाहिए।
५) असामान्य प्रश्नाको सम्मान करना चाहिए।
६) अपने शिष्यों को दिखाओ के विचारों का मूल्य होता है।
७) छात्र को अध्ययन करने के लिए प्रेरित करो

Scanned with CamScanner

८) मूल्यांकन को कारणों तथा परिणाम से सम्बन्धित करो
९) बालक के सृजनात्मक चिंतन पर अधिक जोर देना चाहिए।
१०)छात्र की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना चाहिए।
११)छात्र ने किए नये कार्य को पुरस्कारित करना चाहिए।
१२)तथाछात्रो के साथ उत्तेजनाकरी संबंध बनाना चाहिए।
१३)छात्र को अपने विचार प्रकट करने का मौका देना चाहिए।
१४) छात्र को नये कार्य करने का मौका और साधन साहित्य देने चाहिए।
१५) अध्यापक ने छात्र के साथ मित्रता पूर्ण संबंध बनाने चाहिए।
१६) पाठशाला का वातावरण भी सजृनशील विचार प्रकट कराने वाला होना चाहीए।
१७) पाठयक्रम के माध्यम से जा पाठ सृजनशील विचारोंको प्रकट कराने वाला हो उसे चर्चा पध्दतीसे अथवा सृजनशीलविचार विकास प्रतिमानपर साथ पढाना चाहिए।
१८) पाटशाला मे अलग अलग परिक्षाओंका आयोजन करना चाहिए।
१९) पाटशाला में बैठा हर एक बच्चा सृजनशील विचारोंसे परिपूर्ण रहता है यह बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए।
२०) सृजनशीलता और बुध्दीमत्ता को कोई संबंध नही है यह बात भी ध्यान मे रखनी चाहिए।

सांराश

इस तरह जीवन कौशल्य शिक्षा का WHO सम्मान कर स्कूल के शिक्षा यह कौशल को शामिल कर बहूत महत्तव पूर्ण कार्य किया है। छात्र को जीवन जीने का तरीका स्कूल मे ही सिकाया जा सकता है पढाए जाने वाले पाठयक्रम के माध्यमसे शिक्षक छात्र की सृजनात्मकता कौशल का विकास कर सकता है। अगर शिक्षक को सृजनात्मक कौशल्य के बारेमे अच्छी जानकारी हो तो वह छात्र का सृजनात्मक विकास अच्छी तहर से कर सकते है. इसलिए शिक्षक को सृजनात्मक सोच क्या है। उसका अर्थ,संकल्पना,और सृजनात्मक विचार को मापा भी जा सकता है और इस सोच का विकास भी किया जा सकता है ।इसलिए शिक्षक को सृजनात्मक विकास करने के लिए सृजनात्मक कौशल के बारेमे जानकारी होना आवश्यक है।सृजनात्मक विचार यह भी एक जीवन कौशल हे दस जीवन कौशल में से यह कौशल भी बहुत पूर्ण भूमीका निभाता है।सृजनात्मक विचार ही व्यक्ती को जीवन में नयी दिशा दे सकते है । आने वाली समस्या का समाधान कर सकते है। निर्णय ले सकते है,अच्छा संप्रेषण कर सकते है,ताणवा का समायोजन कर भावनाओंपर नियंत्रण रख सकते है। और जीवन को सफल बना सकता है।

समग्र ग्रंथ सुची

- चतुर्वेदी स्नेहलता,(२०१६): सम्पूर्ण पाटयक्रम में भाषा
- Bhavaneswane Lakshmi, (२००९):,'Life Skill Education,' University News
- Meena (२०१०):,'The Need for Life Skills Cented Education Via Life Skills Paradigm,' University News

Scanned with CamScanner